आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2015-2017

मासिक पत्रिका

अजायब ✵ बानी

वर्ष : तेरहवां | अंक : दूसरा | जून-2015

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

5 अनमोल वचन

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश

9 पवित्र

सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

15 सच्ची मस्जिद

कबीर साहब की बानी (मुम्बई)

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

29 सवाल-जवाब

77 आर.बी. आश्रम (राजस्थान)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। फोन- 099 50 55 66 71 (राजस्थान) 098 71 50 19 99(दिल्ली)

विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन-099 28 92 53 04, 096 67 23 33 04

उप सम्पादिका : नंदिनी सहयोग : परमजीत सिंह

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 जून 2015 -159- मूल्य – पाँच रुपये

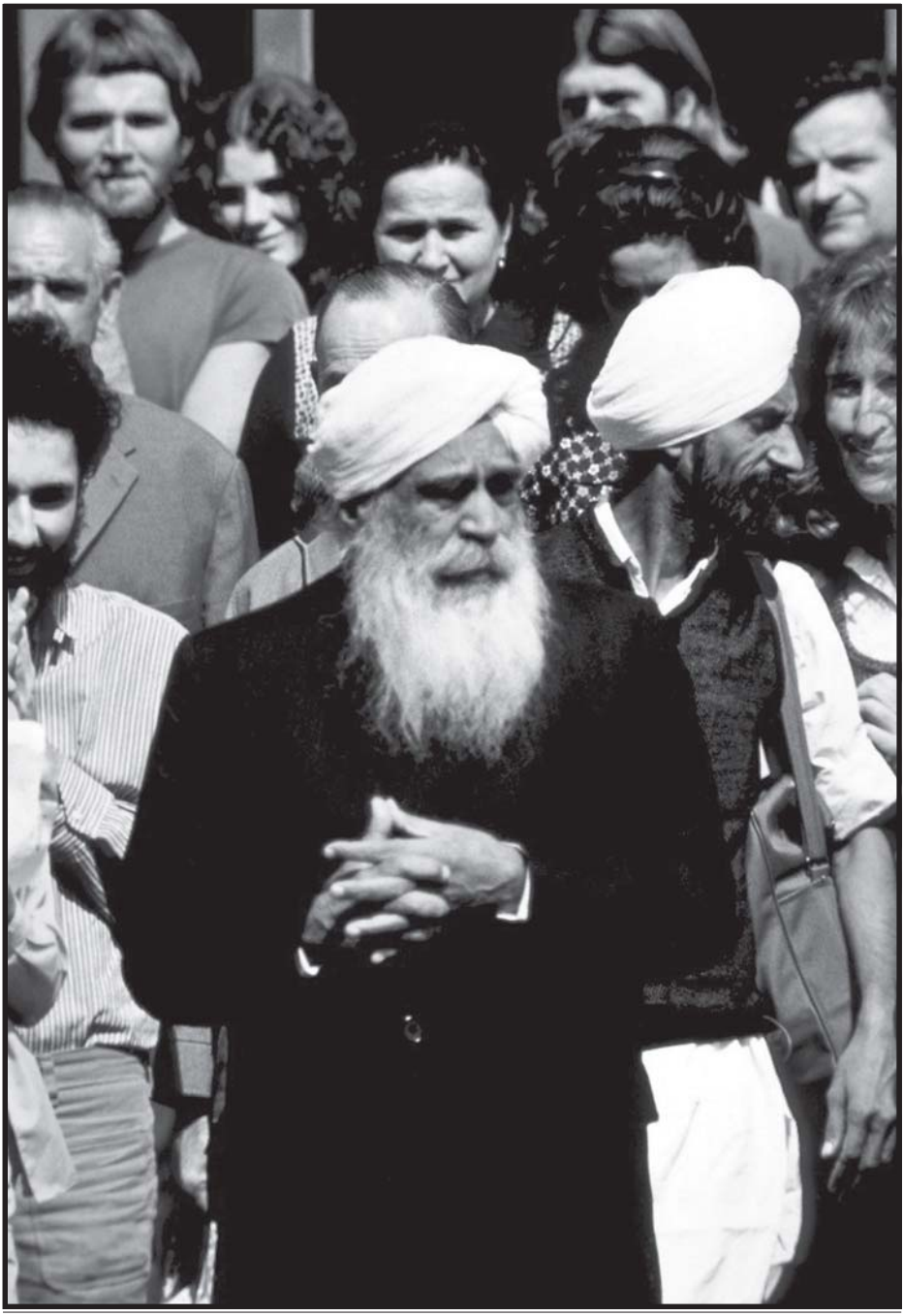

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

अनमोल वचन

अपना कोई नहीं है जी, कि अपना सतगुरु प्यारा जी।

वे जीव बड़े भाग्यशाली हैं जिन्हें प्रभु ने नाम के लिए प्रेरित किया। यह प्रभु की दया ही है कि वह नाम के लिए प्रेरित करता है। प्रभु की प्रेरणा की वजह से ही हम किसी महात्मा की सोहबत-संगत में जाते हैं। बेशक! महात्मा हमारे घर में ही जन्म क्यों न ले लें, पड़ोस में ही क्यों न रहने लग जाएं अगर परमात्मा हमारे ऊपर दया-मेहर न करे तो हमें उस पर भरोसा ही नहीं आएगा।

यह उस मालिक की हमारे ऊपर खास दया है कि उसने कृपाल का रूप धारण करके कितनी-कितनी दूर जाकर रूहों का उद्धार किया और अपने बारे में जानकारी दी कि मैं आपके जिस्म के अंदर इस रूप में बैठा हूँ अगर आप मुझसे मिलना चाहते हैं तो इस तरह मिल सकते हैं। गुरु नानक साहब कहते हैं:

धन धन कुल धन धन जननी जिन गुरु जणया माए।

वह कुल धन्य है जिस कुल में ऐसा सूरमा जन्म लेता है। वह माँ धन्य है जिसने ऐसे बच्चे को जन्म दिया। वह सतगुरु धन्य है जिसने दुनिया की तरह अपना वक्त फिजूल नहीं गुजारा नाम की कमाई की। नाम की कमाई का यह फायदा हुआ पहले उसने अपना उद्धार किया फिर प्रभु की तरफ से उसे यह ईनाम मिला जो भी उसे प्यार से देख ले उसका भी उद्धार हो जाएगा।

हमारी आत्मा के ऊपर मन का पर्दा है। मन के ऊपर माया का पर्दा है मन, इन्द्रियों के आगे बेबस है। मन के बस होकर हमारी आत्मा भी बेबस है। मन का घर ब्रह्म, त्रिकुटी है। मन अपने

बह्म, त्रिकुटी को छोड़कर विषय-विकारों के जंगल में पागलों की तरह फिर रहा है, यहाँ मन को कोई सुख-शान्ति नहीं।

काल ने एक बार सत्तर युग और एक बार चौसठ युग एक अंगूठे के भार पर खड़े होकर सतपुरुष की भक्ति की। सतपुरुष काल की भक्ति से खुश हो गया। सतपुरुष ने काल से कहा, ''क्या माँगता है?'' काल ने सतपुरुष से कहा, ''मुझे तेरी रचना प्यारी नहीं लगती तू मुझे ऐसा द्वीप दे जिसमें मेरा हुक्म चले, मैं जो चाहे करूं। चाहे किसी को गरम तवे पर बिठाऊं, चाहे किसी को सूली पर चढ़ा दूं; कोई मुझसे हिसाब-किताब न पूछे।'' सतपुरुष ने काल को जीव दे दिए। जब काल को जीव सौंपे गए तो कई जीव गिड़-गिड़ाकर रोए कि तू हमें इसके साथ भेज रहा है अगर यह हमें तंग करे या कष्ट दे तो हमें छुड़वाने का भी कोई उपाय होगा।

सतपुरुष ने जीवों के साथ इकरार किया कि मैं प्रेम वश होकर काल को वचन दे चुका हूँ तुम मेरे वचनों को निभाओ। मैंने काल के साथ एक शर्त रखी है कि यह तुम्हे एक बार इंसान का जामा जरूर देगा। अगर काल तुम्हें तंग करे, तुम दुनिया से मुँह मोड़कर मुझे पुकारोगे तो मैं इंसान का तन धारण करके तुम्हें लेने के लिए आऊँगा। जिनके दिल में तड़प होगी वे मेरे पास आ जाएंगे, मैं उनकी बाजू पकड़कर ले जाऊँगा जिन्हें संसार प्यारा लगेगा वे मेरा वचन नहीं सुनेगें मुझे देखकर खुश नहीं होंगे। सतपुरुष अपने वचन से बंधा हुआ हमारे बीच आकर हमारी ही तरह रहता है।

कबीर साहब ने *अनुराग सागर** में काल और दयाल का भेद बहुत खोलकर लिखा है। कबीर साहब पहले सन्त थे जो चारों युगों में आए। काल आपके साथ बहुत भयानक टक्कर लेता रहा आपको बहुत कष्ट देता रहा।

काल ने कबीर साहब से कहा, ''सतपुरुष ने खुश होकर मुझे राज्य दिया है। तू मेरा बड़ा भाई है तू भी खुश होकर मुझे कोई वर दे। कबीर साहब ने कहा, ''अन्यायी काल! तू लोगों को बहुत तंग कर रहा है मैं तेरा वचन नहीं मानूंगा। जो जीव मेरी बात मानेंगे मैं उन्हें जरूर मालिक के देश लेकर जाऊँगा।''

काल ने कबीर साहब से कहा, ''तू लोगों से कहेगा कि माँस छोड़ो, शराब छोड़ो, बुरे कर्म करना छोड़ो तो ही मैं तुम्हे मालिक के देश लेकर जाऊँगा लेकिन मैंने दुनिया में खुला होका दे देना है कि माँस खाओ शराब पिओ। मैं मर्दों को ही नहीं औरतों को भी शराब पीने और मीट खाने में लगा दूंगा। मैं घर-घर के अंदर जीवों में भ्रम पैदा कर दूंगा, लोगों के बीच ऐसे प्रचार कर दूंगा कि तुम शराब मीट के बिना बच ही नहीं सकते। तेरी भक्ति मुश्किल है तेरी बात कौन मानेगा?''

जिस तरह खानाबदोश किसी के बच्चे को उठाकर ले जाते हैं तो पिता खानाबदोशो वाला रूप धारण करके उनके बीच आकर रहना शुरू कर देता है। पिता रोज अपने बच्चे को बताता है लेकिन बच्चा अपने पिता को नहीं पहचानता। पिता चाहता है कि बच्चा किसी न किसी तरह मेरी बात मान जाए तो मैं इसे इसका घर सच्चखंड दिखा दूं कि तू क्यों खानाबदोशों की तरह कभी कहीं झोपड़ी डालता है तो कभी कहीं झोपड़ी डालता है। कभी कहीं जन्म लेता है तो कभी कहीं जन्म लेता है?

रोज-रोज की सोहबत से बच्चे के अंदर अपने घर की याद जाग जाती है। बच्चे का पिता उसे समझा-बुझाकर उसके घर सच्चखंड ले जाता है। गुरु नानक देव जी कहते हैं:

जिन तुम भेजे तिने बुलाए सुख सहज सेती घर आओ।

प्यारेयो! जिस भगवान ने आपको इस दुनिया में भेजा है, वह हमारी मार्फत आपको बुला रहा है। आओ! हम आपको आपके घर ले चलें। गुरु रामदास जी कहते हैंः

सन्तों सुनो सुनो जन भाई गुरु काढे बाँह कुकीजे।
जे आत्म को सुख नित लोड़े सतगुरु शरण पवीजे।।

आप कहते हैं, ''सतगुरु पावर इस दुनिया में आकर होका लगाता है। जिस तरह मल्लाह अपने बेड़े को समुद्र के किनारे खड़ा करके आवाज लगाता है कि जिन्होंने दूसरे किनारे जाना है वे इस बेड़े में बैठ जाएं। जो उस बेड़े में बैठ जाते हैं वे दूसरे किनारे पहुँच जाते हैं; जो सोचते रहते हैं वे रह जाते हैं।''

सतगुरु पावर मल्लाह की तरह बाँह खड़ी करके कहता है, ''प्यारेयो! अगर आप अपनी आत्मा को सुख देना चाहते हैं तो किसी महात्मा की शरण में जाएं।'' ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश

पवित्र

हमारे मन को विषय-विकारों का कीचड़ लगा हुआ है, कीचड़ लगने से शरीर मैला हो जाता है। शरीर पवित्र होगा तो मन जरूर पवित्र होगा क्योंकि शरीर का संबन्ध मन के साथ है। मन जितना पवित्र होगा उतनी ही हमारी आत्मा **पवित्र** होगी। 'शब्द' पवित्र है। 'शब्द' सच्चखंड से उठकर हमारे बीच आ रहा है जब आत्मा **पवित्र** हो जाती है तो ऐसी कोई ताकत नहीं जो 'शब्द' को आत्मा से अलग रख सके।

जिस तरह लोहे को जंगाल लगी हो तो चाहे आप उस पर चुंबक रख दें, चुंबक लोहे को नहीं खींचेगा अगर लोहे को जंगाल नहीं लगी हुई तो चुंबक फौरन लोहे को अपनी तरफ खींच लेगा। इसी तरह अभी हम 'शब्द' सुनते तो हैं लेकिन 'शब्द' हमें अपनी तरफ खींचता नहीं क्योंकि हमारी आत्मा के ऊपर मैल चढ़ी हुई है। सिमरन आत्मा की सफाई के लिए झाड़ू का काम करता है। हमें सोते-जागते, उठते-बैठते, किसी से बात करते हुए भी सिमरन करते रहना चाहिए।

मुख की बात सगल स्यों करदा जीव संग प्रभ अपने घर दा।

प्रेमी लोग दुनिया के साथ बातचीत भी करते हैं लेकिन उनके दिल की तार सिमरन के साथ लगी रहती है। यह सोच-विचार करने वाली बात है कि सिमरन की तार हमें सतगुरु के साथ जोड़े रखती है। प्रेमी की जुबान सदा तर रहनी चाहिए। एक दिन अभ्यास में नागा करना आप समझें कि हम भजन से बहुत दूर हो गए हैं। जिन महात्माओं ने उस परमात्मा को प्रकट किया वे कहते हैं:

ईक खिन्न विसरे स्वामी जानों बरस पचासा।

एक सैकिंड भी परमात्मा या अपने प्यारे सतगुरु को भूल जाने से पचास साल जितना फर्क पड़ जाता है। सोचें! जो लोग कई-कई दिन भजन नहीं करते या कई-कई घंटे सिमरन ही भूले रहते हैं उनकी क्या हालत होगी? परमात्मा को एक तिल जितना भूल जाने से भक्ति में बहुत बड़ी दरार पड़ जाती है। आप हमेशा उस परमात्मा की याद बनाए रखें, उसकी याद ही हमारा उद्धार करेगी।

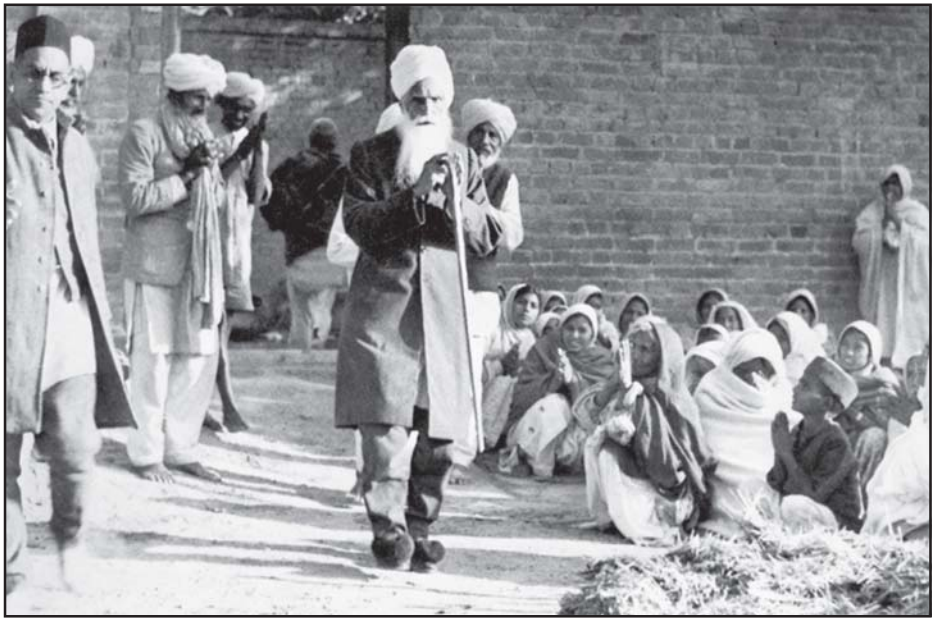

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर आपसे भजन नहीं होता तो आप कम से कम सन्तों के साथ प्यार बना लें क्योंकि सन्त प्यार की मूरत होते हैं। आखिरी वक्त जिधर हमारा झुकाव होगा हमने वहीं जाना है। सन्तों के साथ प्यार है तो हमने सन्तों में ही समाना है। सन्तों ने मालिक के पास लेकर जाना है अगर हम **पवित्र** होंगे तभी सन्तों की याद बना सकते हैं।''

आप देखें! आप दुनिया को थोड़ा सा भी याद करें तो रात को बड़ी आसानी से सपने आने शुरू हो जाते हैं, दुनिया का ख्याल बहुत जल्दी पक जाता है लेकिन गुरु का ख्याल क्यों नहीं पकता, गुरु का स्वपन क्यों नहीं आता? गुरु **पवित्र** है वह हमारे मैले हृदय में नहीं आता क्योंकि हम मन-इन्द्रियों के घाट पर हैं।

कभी-कभी हमारा मन शान्त होता है हमारे हृदय में थोड़ी बहुत पवित्रता होती है जब हम सोते हैं तो गुरु अपनी दया से हमारी सुरत को ऊपर खींच लेता है, उस वक्त हमें गुरु का स्वपन आता है। प्रेमी को जिस दिन गुरु का स्वपन आ जाए उस सारे दिन उसका दिल गुलाब के फूल की तरह खिला रहता है लेकिन **पवित्र** न होने की वजह से हम गुरु की दया को पूरी तरह प्राप्त नहीं कर पाते। कई दफा गुरु स्वपन में जो कहना चाहता है और कह भी देता है लेकिन आप भूल जाते हैं या गुरु की पूरी आवाज नहीं सुन रहे होते क्योंकि आपका झुकाव नीचे की तरफ होता है।

प्रेमी को हमेशा सिमरन के द्वारा अपने ख्याल को तीसरे तिल की तरफ लगाए रखना चाहिए। जब आप एक बार तीसरे तिल पर इकट्ठे हो जाएंगे, अपने ख्याल को थोड़ा सा भी इकट्ठा करने लग जाएंगे तो आपके अंदर बहुत भारी प्यार जागेगा फिर आप उस प्यार या लगन को छोड़ नहीं सकेंगे। जैसे आज लगाना मुश्किल है वैसे तोड़ना भी मुश्किल है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

तोड़ी न टूटे छोड़ी न छूटे ऐसी माधो खिच तनी।

आप देखें! प्रेमियों के ऊपर बड़े-बड़े कष्ट आए। उस समय मुसलमानों का बहुत जोर था। यहाँ दिल्ली में भाई मतिदास के आगे आरा लाकर रख दिया गया। उस समय के मुगलों ने भाई मतिदास से कहा कि तू जिसकी खातिर अपनी जान दे रहा है, यह

तेरे नजदीक पिंजरे के अंदर बंद है। यह अपनी रक्षा नहीं कर सकता तो तेरी रक्षा किस तरह करेगा? हम तुझे कोई अच्छा ओहदा दे देते हैं, अच्छी धन-दौलत दे देते हैं तू इसका साथ छोड़ दे और हमारे मजहब को कबूल कर ले। भाई मतिदास बाहरमुखी नहीं था। वह अंदर देखता था कि मेरा गुरु कुलमालिक है। भाई मतिदास ने कहा, ''अगर आप मेरे ऊपर तरस करते हो तो मेरा मुँह मेरे प्रीतम की तरफ करके मुझे आरे से जल्दी चीर दें।'' जल्लाद भी भाई मतिदास के सिदक को देखकर काँप उठे।

जब एक बार प्रेमी शिष्य के अंदर प्रेम लग जाता है, यह इस तरह है जैसे दीपक की बत्ती जैसे-जैसे अपना सिर कटवाती है वैसे-वैसे वह ज्यादा रोशनी करती है। उसी तरह जब प्रेमी अंदर जाने लग जाता है फिर चाहे कोई भी घटना घटे उसका अपने गुरु से प्रेम नहीं टूटता, प्रेमी सोचता है कि यह मेरा कर्म है। हमने अभ्यास नहीं छोड़ना, अभ्यास दिल लगाकर करना है। पहले अभ्यास, दुनिया के काम बाद में। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थेः

हत्थ कार वन्नी दिल यार कन्नी।

हमारी हालत इस तरह की हो जानी चाहिए कि काम हाथ पैरों से करना है और अंदर नाम की तार बजे। अंदर की तार हमेशा ही सिमरन से जुड़ी रहे। हमारे लिए सिमरन और भजन-अभ्यास जरूरी है। मैंने सबसे पहले बताया था कि शरीर और मन **पवित्र** होना चाहिए अगर मन पवित्र है तभी हम अभ्यास कर सकते हैं अगर मन विषय-विकारों में फँसा हुआ है तो हम अभ्यास नहीं कर सकते। सतगुरु जो दया करता है उतनी दया तो हमारी सफाई में ही लग जाती है फिर सतगुरु दया करता है लेकिन हम फिर मैल लगा लेते हैं।

जब हम विषय-विकारों में फँसते है तो काल सतगुरु से कहता है कि तूने इसे नाम दिया है इसकी करतूत देख? आपके अंदर जो ताकत बैठी है वह साँस-साँस के साथ देख रही है। सतगुरु अंदर बैठा है वह अंतर्यामी है। दुनिया काल की है अगर काल न देख रहा हो तो पुण्य और पापों का लेखा-जोखा कौन दे? आप जो हरकत करते हैं उसे काल देख रहा है वह लिख लेता है।

गुरु सब्र वाला होता है। गुरु हम पर विश्वास करता है और काल से कहता है कि यह जरूर सुधरेगा अगर हम सिमरन करते रहते हैं तो सतगुरु अपनी पूरी दया करता रहता है और हम एक दिन कामयाब हो जाते हैं। हमने आज का काम कल पर नहीं छोड़ना। हमें आज, कल करते हुए वक्त नहीं गुजारना चाहिए कि आज भजन करेंगे कल करेंगे परसो करेंगे। जिस मन ने आज आपको यह सलाह दी है कि रात बड़ी है कल भजन कर लेंगे। वह कल भी यही राय देगा, वह अंदर ही है। कबीर साहब कहते हैंः

कल करन्ता अब कर अब करता सोई ताल।
पाछे कछू न होवई जो सिर पर आयो काल।।

हम सबने दिल लगाकर भजन-सिमरन करना है। भजन-सिमरन ही हमारे साथ जाएगा। क्यों न वह तोशा इकट्ठा किया जाए जो हमारे साथ जाना है! दुनिया के काम भी करने हैं। जो आदमी 'शब्द-नाम' की कमाई को अपनी ड्यूटी समझता है, वही आदमी दुनिया के काम भी अच्छे तरीके से कर सकता है।

यहाँ जो एक दिन का कार्यक्रम था वह अब समाप्त है। हम आप सबका धन्यवाद करते हैं जिन्होंने अपना समय निकालकर भजन-सिमरन में लगाया। यहाँ से जाने के बाद भी आप अपना भजन-सिमरन करेंगे।

***

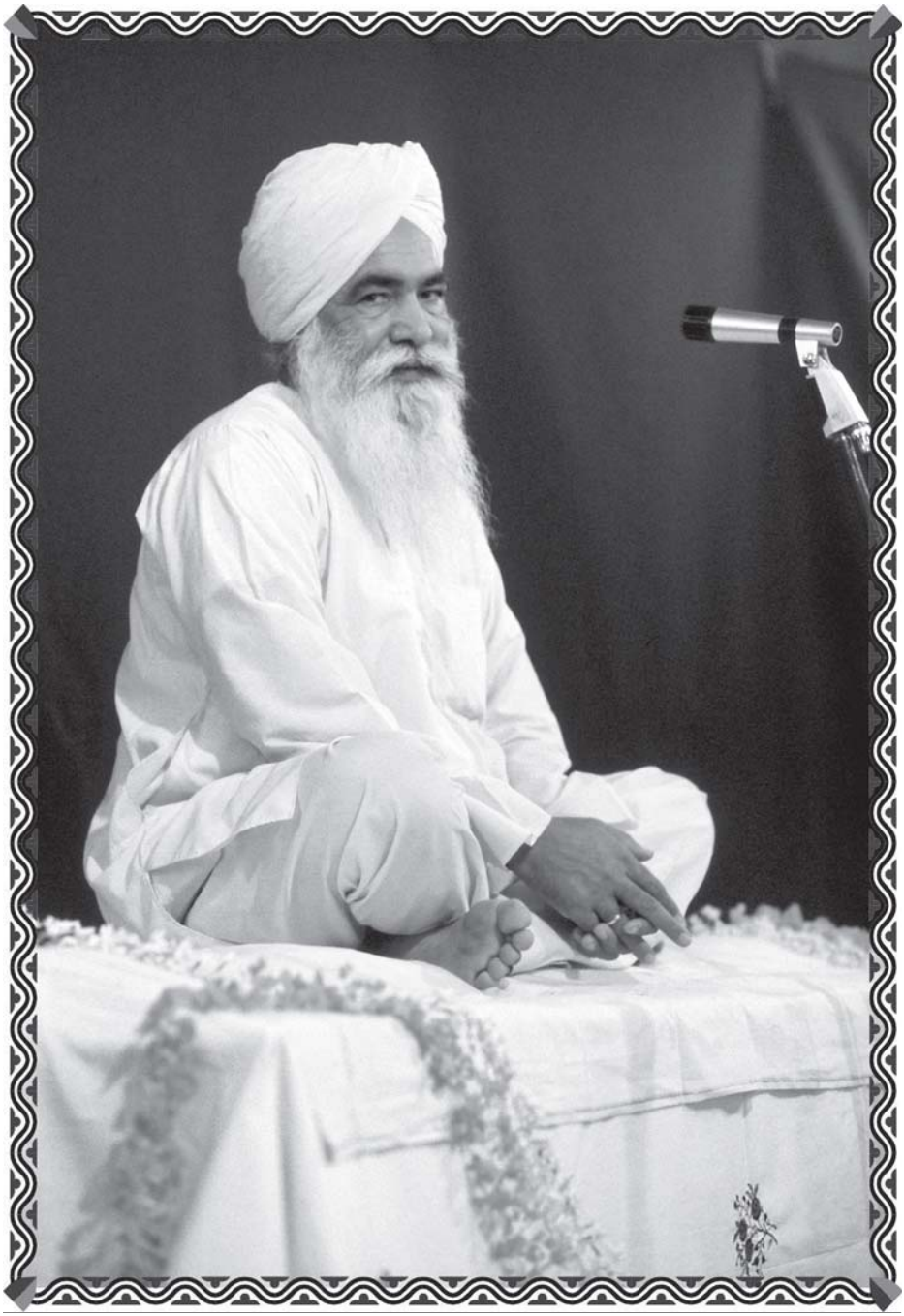

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सच्ची मस्जिद

कबीर साहब की बानी

मुम्बई

आपके आगे कबीर साहब का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनने और समझने वाला है। मिश्री को किसी भी तरफ से खाएं वह मीठी होती है। इसी तरह सन्त-महात्मा किसी भी युग में या किसी भी समाज में आएं उन सबका यही उपदेश होता है कि परमात्मा एक है और परमात्मा से मिलने का साधन भी एक है।

मैंने कल भी सतसंग में बताया था कि सन्त-महात्मा अपनी मर्जी से संसार में नहीं आते। वे अपनी मर्जी से कोई प्रचार नहीं करते और न ही नामदान देते हैं; वे परमात्मा के भेजे हुए संसार में आते हैं। जिन आत्माओं का धुर से कर्म बन जाता है परमात्मा उन आत्माओं को सन्तों के पास भेजता है। महात्माओं के ऊपर उन आत्माओं को नाम के रास्ते पर डालने की जिम्मेवारी आती है। यह सब उस मालिक का ही हिसाब-किताब है।

कुदरत ने नियम बनाए हैं। यह सब कुछ पहले से ही तय होता है कि कब किस जीव को 'नाम' मिलना है या इसे फिर दुनिया में चक्कर लगवाने हैं। महात्मा के लिए दूर-नज़दीक का कोई फर्क नहीं पड़ता। यह महात्मा का ही फैसला होता है कि हमने खुद उस जीव के पास जाना है या किसी सतसंगी से पर्दे के पीछे काम लेना हैं कि तूने फलानी आत्मा को नामदान के लिए प्रेरित करना है। हम सतसंगी लोग ये सब कुछ अपनी आँखों से देखते हैं कि ऐसी घटनाएं हमारे साथ घटती हैं। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

आपण लिए जे मिले विछुड़ को रोवन।

हे परमात्मा! अगर तुझसे मिलाप कर लेना हमारे बस में होता तो हम तुझसे बिछुड़कर चारों कुंटो, दसों दिशाओं और ऊँची-नीची योनियों में क्यों भ्रमते फिरते? यह कृपा तो तूने ही की है। जीव अंधा है, परमात्मा सतगुरु सुजाखा है वह जिसे चाहे आवाज लगाकर अपनी अंगुली पकड़ा सकता है, पकड़ाता भी है।

महात्मा न तो पहले की बनी समाजों को तोड़ने के लिए आते हैं और न कोई नई समाज बनाने के लिए आते हैं। महात्मा हमें आपस में प्यार सिखाने के लिए और परमात्मा की भक्ति करवाने के लिए आते हैं। जब हर समाज के आदमी महात्मा के पास जाते हैं तो वहाँ एक समूह बन जाता है। प्यासी आत्माओं की प्यास बुझती रहती है और वहाँ आने वालों को नाम का अमृत मिलता रहता है लेकिन जब कमाई वाले महात्मा वहाँ से चले जाते हैं तो उनके अनुयायी ही उस समूह को कोई नाम दे देते हैं। वहाँ समाज बन जाते हैं, हम समाजों की बुनियाद पढ़ सकते हैं।

आज से लगभग सवा पाँच सौ साल पहले सिक्खों का नामोंनिशान तक नहीं था। गुरु नानकदेव जी जब तक संसार में रहे तब तक किसी समाज का नाम नहीं था। हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई जो भी आपके पास गया आपने उसे 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ा। आप मंदिरो में भी गए मस्जिदों में भी गए। गुरु गोबिंद सिंह जी अपनी बानी में लिखते हैं:

दयोरा और मसीत वही।

दयोरा और मस्जिद तो परमात्मा की याद के लिए बनाई गई हैं। जब हम इन्हें मजहब की शक्ल दे देते हैं तब अपने आपको हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख या इसाई समझते हैं अपने रीति-रिवाज को उत्तम समझते हैं और दूसरे के साथ घृणा करते हैं।

गुरु नानकदेव जी लोदी सुल्तानपुर के मोदीखाने में काम करते थे। जब संसार में परमात्मा का संदेश देने का मौका आया तो आप वह काम छोड़कर एक दिन श्मशान भूमि की कब्रों में जाकर बैठ गए। तब किसी ने कहा कि यह भूतना है और किसी ने कहा कि यह बेताला है। आप अपनी बानी में जिक्र करते हैं:

कोई आखे भूतना कोई कहे बेताला।
कोई आखे आदमी नानक बेचारा।।

उस समय लोगों ने गुरु नानकदेव जी से पूछा कि आप हिन्दु हैं या मुसलमान हैं? गुरु नानकदेव जी ने कहा:

हिन्दु कहे ता मारिए मुसलमान भी नाहे।
पांच तत्त्व का पुतला गैबी खेले माहे।।

यहाँ मुसलमानों का जोर है अगर मैं अपने आपको हिन्दु कहता हूँ तो आप लोग मुझे मारेंगे लेकिन आप मुझे जैसा मुसलमान समझते है मैं वैसा मुसलमान भी नहीं हूँ।

सुल्तानपुर लोदी का बादशाह दौलतखान पठान था। उसने गुरु नानकदेव जी से कहा अगर आप मुसलमान हैं तो हमारे साथ चलकर नमाज पढ़ें। गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''अगर आप मुझे नमाज पढ़वाकर खुश हैं तो चलो।'' मस्जिद में जाकर सबने नमाज पढ़नी शुरू की लेकिन गुरु नानकदेव जी खड़े रहे। मौलवी लोगों ने ऐतराज किया। दौलतखां पठान ने भी कहा, ''तूने मस्जिद में आकर हमारे साथ नमाज नहीं पढ़ी।'' आपने कहा कि मैं किसके साथ नमाज पढ़ता? मौलवी साहब ने नमाज पढ़ानी थी लेकिन इनके घर में घोड़ी ने बच्चा देना था इनका ख्याल तो वहाँ पर था और तू उस समय काबुल में घोड़े खरीद रहा था। बादशाह भी मान गया कि हाँ मेरा ख्याल तो बार-बार उस तरफ ही जा रहा था।

मौलवी ने कहा हाँ वाक्य ही मेरी घोड़ी बच्चा देने वाली है मेरा ख्याल बार-बार अपने घर की तरफ जा रहा था।

गुरु नानकदेव जी का उन्हें समझाने का यही भाव था कि आप जमीन पर तो माथा मारते हैं लेकिन आपका ध्यान किसी और तरफ है। आप दुनिया को तो धोखा दे रहे हैं कि हम अच्छे मुसलमान हैं नमाज पढ़ते हैं लेकिन जो परमात्मा आपके अंदर बैठा है उसे न तो आज तक किसी ने धोखा दिया है और न ही कोई दे सकता है।

बेशक कबीर साहब मुसलमानों के घर में पैदा हुए लेकिन हिन्दु और मुसलमान दोनों ही फिरके आपके सख्त खिलाफ थे क्योंकि सन्त दोनों के ही रीति-रिवाज को नहीं अपनाते। जो सवाल गुरु नानकदेव जी से किया गया वही सवाल कबीर साहब से किया गया कि आप हिन्दु हैं या मुसलमान है? कबीर साहब ने कहाः

न मैं हिन्दु न मुसलमान अल्लाह राम के पिंड प्राण।

न मैं हिन्दु हूँ न मुसलमान हूँ। आप मुझे अल्लाह या राम किसी का भी बच्चा समझ लें! राम और अल्लाह एक ही है। सारे गुरु-पीर कोई भी बुरा कर्म करके नहीं गए वे भी अपने वक्त के लोगों को नाम के साथ जोड़कर सच्चखंड पहुँचाते रहे हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि हमारे दिल में सारे ही गुरु-पीरों की इज्ज़त है। स्वामी जी महाराज भी कहते हैंः

सबको करूं प्रणाम हाथ जोड़कर।

कबीर साहब के समय में हिन्दुस्तान पर बड़ा शक्तिशाली राजा लोदी सिकन्दर राज्य करता था। उसने कबीर साहब को खत्म करने का कोई भी मौका नहीं छोड़ा। उसने कबीर साहब के हाथ-पैर जंजीर से बंधवाकर गंगा के पानी में फेंक दिया लेकिन मालिक ने कबीर साहब की वहाँ भी रक्षा की, जंजीरे टूट गई। कबीर साहब गंगा में इस तरह दिखाई दिए जिस तरह मृगशाला के ऊपर बैठकर कोई साधु भजन कर रहा हो। कबीर साहब इस घटना का जिक्र इस तरह करते हैंः

गंग गुसाईंन गहन गंभीर जंजीर बांधकर खड़े कबीर।
मन न डोले तन काहे डराए चित्त चरन कमल रहया समाए।।

आप कहते हैं, ''मुझे जंजीरें बांधकर गहरी नदी में धक्का दे दिया। मेरा मन प्रभु के चरणों में जुड़ा हुआ था फिर तन का क्या डर अगर यह तन चला भी जाए तो क्या है? जब हम परमात्मा के बन जाते हैं तो परमात्मा भी रक्षा करता है। फिर एक हाथी को शराब पिलाकर मदहोश करके मेरी गठरी बांधकर हाथी के आगे रख दी।'' कबीर साहब इस घटना का जिक्र करते हैंः

क्या अपराध सन्त है कीन्हा, बांध पोट कुंचर को दीन्हा।
कुंचर पोट ले ले नमस्कारा, बूझे न काजी अंधियारा।
तीन बार पतिया भर लीन्हा, मन कठोर अजहू न पतीन्हा।।

हम ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि हमारे अंदर ईर्ष्या होती है मजहब का जहर चढ़ा होता है। हम सोचते हैं कि जिस तरह हम परमात्मा की भक्ति करते हैं, रीति-रिवाज करते हैं यह उस तरह क्यों नहीं करता। जिन्हें सच्चाई का ज्ञान हो जाता है, वे कहते हैं

साच कहूँ तो कोई न माने, झूठ कहा न जाई हो।

सच बात तो यह है कि परमात्मा आपके अंदर बैठा है। वह परमात्मा हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई सभी का है और सबको अंदर से ही मिल सकता है। बुल्लेशाह कहते हैंः

सच कहां तां भाबड़ मचदा है, झूठ आखां तां कुछ न बचदा है।

देखो जग बौराना साधो गुरु का मर्म न जाना।।

कबीर साहब कहते हैं, ''देखो! यह दुनिया किस तरह मन के नशे में, कौमो और मजहबों के प्यार में सोई हुई है। इस संसार में बड़ी-बड़ी चोटी के महात्मा आए, महात्मा हमें संसार से निकालने के लिए आते हैं लेकिन हम महात्माओं को कष्ट देते हैं।''

गुरु नानकदेव जी को कुराहिया कह दिया। कसूर के इलाके में लोगों ने उन्हें गांव में आने ही नहीं दिया कि यह लोगों के दिमाग बिगाड़ता है। गुरु नानकदेव जी ने एक कोढ़ी की कुटिया में जाकर रात बिताई और कोढ़ी का कोढ़ दूर हुआ। क्राईस्ट आत्माओं को परमात्मा के साथ जोड़ने के लिए आए लेकिन लोगों ने उन्हें सूली पर चढ़ा दिया, काँटों का ताज पहनाया।

मौहम्मद साहब को मक्का से निकाल दिया। आपने मदीना में तीन दिन भूखे-प्यासे काटे। जब आपको शहर से निकाला गया तो लोग अपने घरों की छत पर गंद लेकर खड़े हो गए, आपके सिर पर गंद गिराया गया। उस मालिक के प्यारे का क्या कसूर था? आप यही कहते थे, ''आपका यह शरीर ही **सच्ची मस्जिद** है, परमात्मा ईंटो-पत्थरों में नहीं रहता वह इस सच्ची मस्जिद में रहता है। खुदा बाहर नहीं आपके अंदर है लेकिन हमने अंदर जाने की बजाय आपको कष्ट दिया। आपने यह भी कहा कि बाहर चिराग जलाने की जरूरत नहीं चिराग तो आपके अंदर जल रहा है। बाहर

ऊँचा-ऊँचा कलमा बोलने से आप परमात्मा के साथ नहीं जुड़ सकते, वह परमात्मा आपके अंदर है वह बिना पढ़े ही पढ़ा जाता है। असली नमाजी वही है जिसके होठ हिलने से हट जाएं, आँखे हरकत करने से हट जाएं, तालू हिलने से रह जाए वह दिल का कलमा है; दिल से ही पढ़ा जाता है।''

अफसोस से कहना पड़ता है कि जब मालिक के प्यारे चले जाते हैं तो उनके अनुयायी जहाँ महात्मा ने दस दिन बिताए होते हैं वहीं जगह बनाकर उस जगह को पूजना शुरू कर देते हैं फिर वहाँ पर कई पार्टियाँ बन जाती हैं। उन पार्टियों से ही सन्यासी, जोगी, जंगम और बौद्ध बने।

बाईबल एक है, क्राईस्ट एक है सारे ईसाई उसे मानते हैं लेकिन फिरको का कोई हिसाब नहीं। एक फिरका दूसरे फिरके से मतभेद रखता है। मैंने दूसरे विश्व युद्ध में देखा है कि ईसाई ही ईसाईयों को मार रहे थे। इसी तरह सिक्खों का गुरुग्रंथ साहब एक है। गुरु साहब भी एक ज्योत हुए हैं लेकिन आज उनके भी पचास से ज्यादा फिरके बने हुए हैं। इसी तरह हिन्दुओं की रामायण और गीता एक है। सारे हिन्दु राम को मानने वाले हैं लेकिन उनके फिरके तो गिनती में भी नहीं आ सकते कि कितने फिरके बने हैं और आगे कितने फिरके बनने हैं।

कबीर साहब प्यार से समझाते हैं, ''हम सब बौरानों की तरह एक-दूसरे से लड़ रहे हैं। हमें असली चीज की समझ नहीं क्योंकि हमें कोई गुरु नहीं मिला, नाम नहीं मिला अगर हमें कोई गुरु मिला हो नाम मिला हो तो हमें पता ही नहीं लगता कि यह आदमी किस मुल्क या जाति का है; गरीब है या अमीर है।''

सन्त-सतगुरु हमें प्यार से समझा देते हैं कि हम सब आत्मा करके एक ही हैं। हम पहले भी एक ही परमात्मा के बच्चे थे और आगे भी हमने उसी परमात्मा के पास जाना है, परमात्मा प्यार है।

मैं आपको वही प्यार सिखाने के लिए आया हूँ। जब तक प्यार का सबक चलता रहता है हम एक-दूसरे से प्यार करते हैं। जब हम प्यार को भूल जाते हैं तो एक-दूसरे से ईर्ष्या करने लग जाते हैं।

हिन्दु कहत है राम हमारा मुसलमान रहमाना।।
आपस में दोऊ लड़े मरत है दुविधा में लिपटाना।।

जब कबीर साहब इस संसार में मौजूद थे उस समय हिन्दुस्तान में और भी फिरके थे लेकिन हिन्दु और मुसलमानों की दो समाजें बहुत जबरदस्त थी। दोनों ही समाज आपस में एक-दूसरे से ईर्ष्या करते थे एक-दूसरे के खून के प्यासे थे।

कबीर साहब कहते हैं, ''आप लोग आपस में क्यों लड़ते हैं हिन्दु कहते हैं कि राम हमारा है, मुसलमान कहते हैं कि अल्लाह हमारा है लेकिन उन्हें यह नहीं पता कि यह एक ही ताकत है चाहे उसे राम, अल्लाह, वाहेगुरु, गॉड कुछ भी कहकर बुला लें!''

महाराज सावन सिंह जी एक छोटी सी कहानी सुनाया करते थे, ''एक पूर्व का रहने वाला और दूसरा सीमाप्रान्त का रहने वाला था। उन दोनों ने हिस्सेदारी में खेतो में बिजाई करने का विचार किया। पूर्व के रहने वाले ने कहा कि मैं गेहूँ बीजूंगा। सीमाप्रान्त में रहने वाले ने कहा कि मैं गंदम बीजूंगा। दोनों का आपस में बहुत झगड़ा हुआ। वहाँ से कोई आदमी जा रहा था, वह झगड़ा देखकर रूक गया। उस आदमी ने कहा कि तुम अपना-अपना बीज लेकर आओ मैं तुम्हारा फैसला कर दूंगा। वे जब बीज लेकर आए तो

दोनों के पास एक ही बीज था। उसने कहा कि तुम दोनों बीजना तो एक ही चीज़ चाहते हो पर फर्क लफ्ज़ों का है।''

इसी तरह राम अल्लाह लफ्ज़ों का फर्क है लेकिन वह ताकत एक ही है। सन्त संसार में आकर इसी चीज़ का न्याय करते हैं कि आप खुद अंदर जाकर सच्चाई को देखें। महात्मा ने अपने प्यार में उस ताकत के अलग-अलग नाम रखे हैं।

दुनिया में कई मुल्क हैं, एक-एक मुल्क में कई-कई स्टेट हैं। उनमें कई भाषाएं हैं उन हजारों भाषाओं में हमने अपने-अपने प्यार में उस परमात्मा के नाम रखे हैं। ये सब समाजिक वर्णात्मक नाम हैं लेकिन मुक्ति धुनात्मक नाम देता है।

गुरु अंगददेव जी कहते हैं, ''धुनात्मक नाम न इस जीभ से बोला जाता है और न इन चमड़े की आँखों से देखा जाता है; यह रूहानी चढ़ाई है। हम इन हाथ-पैरों से यह चढ़ाई नहीं चढ़ सकते यह तो बिना देखा बिना बोला कानून है।'' कबीर साहब कहते हैं:

अल्लाह लख न जाई लखया, गुरु गुरु दीन्हा मीठा।
कहे कबीर मेरी शंका नाठी ते सर्व निरंजन डीठा।।

अल्लाह अलख है वह लखा नहीं जाता। गुरु ने मुझे मीठा और प्यारा नाम दिया मेरी शंका दूर हो गई। मैंने अंदर जाकर उसे सबके अंदर देख लिया।'' आपने अंदर देखकर ही बाहर देखा। गुरु नानकदेव जी महाराज भी कहते हैं:

राम राम सबको कहे कहयां राम न होय।
गुरु प्रसादी राम मन बसे तां फल पावे कोय।।

अगर तोते की तरह राम-राम कहते जाएं तो वह राम नहीं मिलता। कोई महात्मा कृपा करे तभी हम उस राम को देख सकते हैं उससे फायदा उठा सकते हैं।

बहुत मिले मोहे नेमी धर्मी प्रात करें इसनाना।।
आतम छोड़ पछाने पूजे तिनका थोथा ज्ञाना।।

कबीर साहब कहते हैं, ''मुझे बहुत से नेमी-धर्मी मिले उनका नियम होता है कि वे रोज सुबह उठकर स्नान करके मूर्ति को पूजते हैं, ध्यान करके लोगों को कथा सुनाते हैं। पहचानना तो अपनी आत्मा को था कि यह आत्मा परमात्मा की अंश है इसे परमात्मा में मिलाएं। आत्मा चेतन है, पत्थर जड़ है। यह जड़ के आगे सिर झुकाता है उसने बोलना नहीं अगर उसे पानी में डाल दें तो वह खुद अपनी रक्षा नहीं कर सकता तो हमारी रक्षा क्या करेगा?''

ठाकुर पूजे मुल्ल ले मन हठ तीर्थ जाए।
देखा देखी स्वांग धर भूले भटका खाए।
पाहन परमेश्वर किए पूजे सब संसार।
इस भरवासे जे रहे सो डूबे काली धार।।

ईक जो कहिए पीर औलिया पढ़े किताब कुराना।।
करे मुरीद कब्र बतलावें उन्हूं खुदा न जाना।।

जिस तरह हिन्दुओं में ऋषि-मुनि हुए लेकिन उन्हें कोई गुरु न मिला इसलिए पुराणों में उनकी हंसी उड़ाई गई है कि वे किस तरह काम के हाथों जलील हुए। इसी तरह मुसलमानों में उन्हें पीर, औलिया या पैगम्बर कहकर बयान करते हैं वे लोग मुरीद तो अपना बनाते हैं लेकिन कब्र पूजने के लिए भेजते हैं। जहाँ मौहम्मद साहब की पैदाईश हुई वहीं उनकी कब्र है जिसे मक्का कहते हैं। जो एक बार मक्का चला जाए उसे कहते हैं कि तू हज कर आया है तेरी जिंदगी का बीमा हो गया है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

अंधे का राह दसया अंधा होय सुजाय।
होय सुजाखा नानका सो क्यों औजड़ पाय।।

अगर अंधा आदमी बेड़ी का मल्लाह बन जाए और उस बेड़ी में अंधे ही चढ़ जाएं तो वह मल्लाह बेड़ी को कहीं भी ले जाकर डुबो देगा! कबीर साहब कहते हैं:

बामन की कथा सौ चोरन की नाव।
सब अंधे मिल बैठयां ते भावे तह ले जात।।

जिस आदमी ने मीठा नहीं खाया अगर वह मीठे का स्वाद बताए तो उस पर ऐतबार करने वाला अपना मुँह मीठा कर लेगा?

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल सदा ही कहते रहे, ''पढ़ा हुआ ही पढ़ा सकता है, पहलवान ही पहलवानी सिखा सकता है। जिसने खुद अपनी जिंदगी में अभ्यास किया है परमात्मा के साथ मिलाप किया है वही हमें अंदर जाने का साधन बता सकता है और हमसे अभ्यास करवा सकता है।''

हिन्दु की दया मेहर तुर्कन की दोनो घर से भागी।।
वह करें जिह्वा वह झटका मारे आग दोऊ घर लागी।।

कबीर साहब प्यार से कहते हैं, ''हिन्दुओं में दया खत्म हो गई है और मुसलमानों में रहम खत्म हो गया है। धरती पर एक इंसान को रहने का जितना हक है उतना ही हक एक पशु-पक्षी को भी है। हिन्दु लोग एक ही बार में काट देते हैं, कहते हैं झटका बना लिया और मुसलमान उसे धीरे-धीरे काटते हैं कहते हैं कि हलाल बना लिया। जब उसमें से ज्योत निकल गई तो पीछे मुर्दा रह जाता है फिर हम उसे किस तरह झटका या हलाल कह सकते हैं?''

भाई गुरदास ने अपनी बानी में एक बकरी की मिसाल दी है कि जब शेर बकरी को खाने लगा तो वह बकरी हँसने लगी। शेर बकरी को हँसते हुए देखकर हैरान हुआ और शेर ने बकरी से

कहा, ''मैं तुझे खाने लगा हूँ और तू हँस रही है।'' बकरी ने कहा, ''अगर परमात्मा सुनता हो तो वह हमारे बच्चों को खस्सी कर दे ताकि इनकी कोई औलाद न हो, वह दुख न सहे। हम घास-फूस खाने वालों की खाल उतारी जाती है तो जो हमारा माँस खाएंगे उनका क्या हाल होगा?''

तुलसी साहब ने घट रामायण के दूसरे भाग में गुरु नानकदेव जी की बहुत तारीफ की है कि गुरु नानकदेव जी ने बहुत बड़ा ग्रंथ लिखा है जिसमें गुरु नानकदेव जी ने मीट, शराब को जगह नहीं दी बल्कि मीट, शराब खाने-पीने वालों को भी अच्छा नहीं कहाः

हक पराया नानका उस सूर उस गाय।
गुरु पीर हामां तां भरे जे मुरदार न खाय।।

या विध हँसत चलत हैं हमको आप कहावें स्याना।।
कहे कबीर सुनो भई साधो इनमें कौन दिवाना।।

कबीर साहब कहते हैं, ''लोग हमें देखकर हँसते और मजाक उड़ाते हैं कि इन्हें परमात्मा की पूजा का ज्ञान नहीं और खुद स्याने बनते हैं। सोचकर देखें! इन फिरकों में कौन दीवाना हुआ फिरता है, कौन परमात्मा की भक्ति करता है? माँस खाने से बुद्धि राक्षस हो जाती है और कर्मों का बोझ बहुत बढ़ जाता है। जितने भी सन्त सच्चखंड से आते हैं सबने हमें मीट शराब से वर्जित किया है।''

जी जो मारे जोरकर ले जवाब खुदाय।
दफ्तर लेखा मंगिए तब मार मुए मुए खाय।
दिन को रोजा रखत है रात हनत है गाय।
वे खून वो बंदगी क्यों खुश होय खुदाय।।

कबीर साहब के समझाने का भाव इतना ही है कि चाहे हम प्रेम प्यार से कितने भी रीति-रिवाज कर लें इनमें मुक्ति नहीं,

मुक्ति नाम में है। बाहर छिलका है और नाम की गिरी अंदर है। सन्त हमारा ख्याल बाहर से हटाकर नाम के साथ लगाना चाहते हैं। हमें चाहिए कि हम सब समाजों का आदर करें सबके साथ प्यार करें क्योंकि आत्मा पशु-पक्षी सबके अंदर है।

गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैं, ''परमात्मा हाथी की पुकार बाद में सुनता है चींटी की पुकार पहले सुन लेता है।'' दस गुरुओ से लेकर उनके सेवक बंदा बहादुर तक किसी भी सेवक ने लंगर में तामसिक भोजन लाल मिर्च, प्याज और मीट को नहीं आने दिया। आज भी उनके हुक्मनामें से पता चलता है कि सिक्खों में लंगर की जो परंपरा चली है उसमें मीट नहीं बनता लेकिन स्वादु लोग गुरु साहब की बानी में से ऐसी तुकों को चुनते हैं जबकि वे तुकें मीट-शराब को प्रेरित नहीं करती लेकिन ढ़िल्लन पुरुष उसमें से अपने मतलब का अर्थ करते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

लिए दिए बिन रहे न कोए।

हम जितना कम बोझ उठाएंगे उतना ही अच्छा है। हम जिसकी गर्दन काटेंगे अगले जन्म में हमें उसका बदला जरूर चुकाना पड़ेगा।

महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''यह न्याय का राज्य है। काल भी न्याय करता है जो जैसा करता है उसे वैसा अवश्य भोगना पड़ता है।''

कबीर साहब ने इस छोटे से शब्द में हमें अच्छी तरह समझाया है कि मुक्ति नाम में है और नाम सन्तों से मिलता है। सन्त नाम के भंडारी बनकर आते हैं। वे जीव को सच्चे नाम के साथ जोड़ते हैं यही उनकी ड्यूटी होती है। वे मालिक के हुक्म से भेजे हुए आते हैं, हुक्म का ही वरतारा करते हैं। ***

DVD No - 567

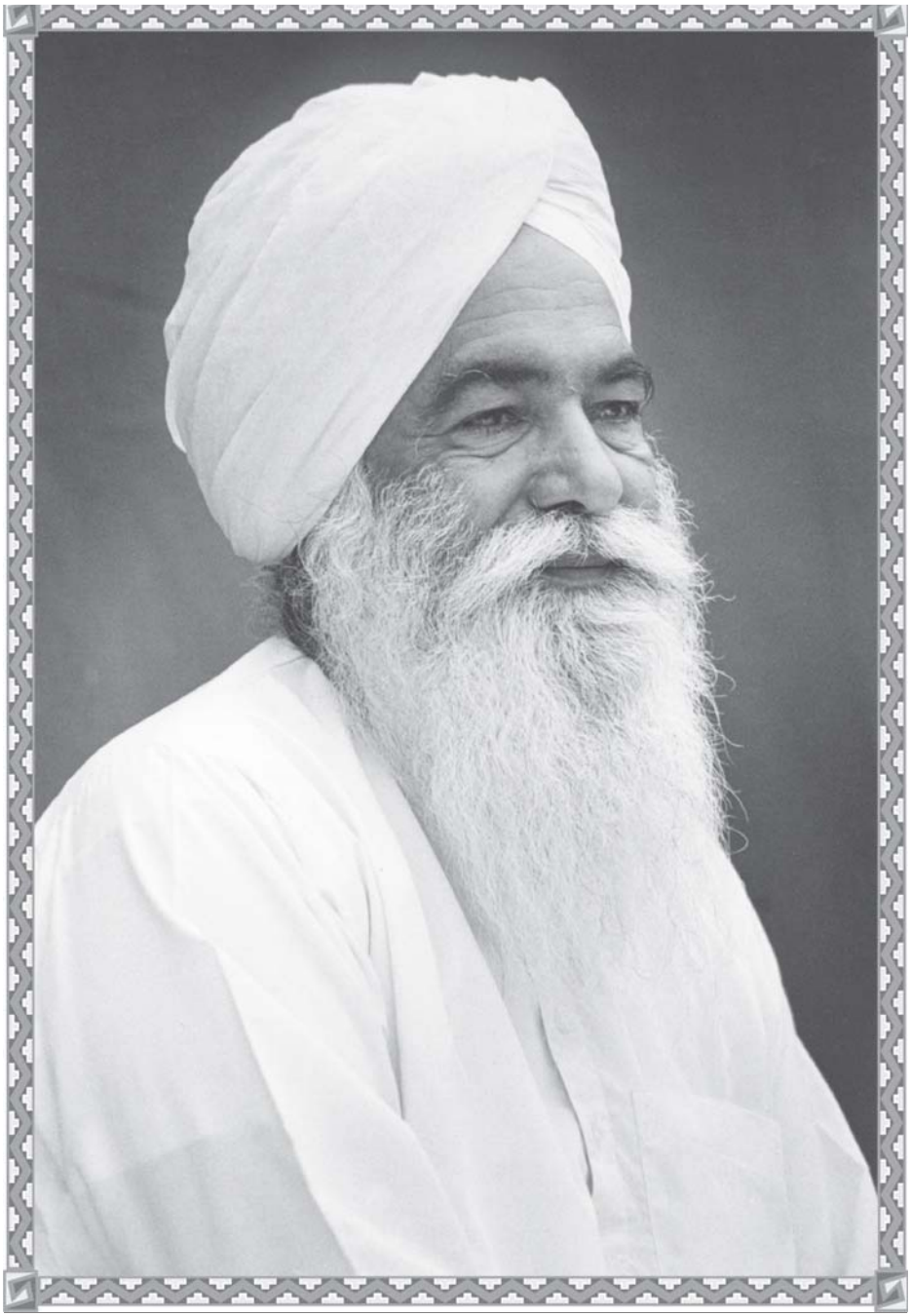

सवाल-जवाब

77 आर.बी. आश्रम (राजस्थान)

एक प्रेमी:- *मैं कई बार अपने आपको पाखंडी महसूस करता हूँ कि मैं जो कर रहा हूँ, डर से कर रहा हूँ भक्ति भावना से नहीं कर रहा हूँ?*

बाबा जी:- हमारे अंदर दो लहरें उठती हैं एक लहर को मन और दूसरी लहर को सतगुरु की ताकत चलाती है। जब हमारे अंदर मन की लहर उठती है तो मन हम पर हावी हो जाता है। तब हमारे अंदर ऐसे विचार आते हैं कि मैं बहुत अच्छा भक्त हूँ गुरु का सेवक हूँ मेरा भजन-सिमरन बहुत अच्छा बनता है। हमें लगता है कि हम भजन-सिमरन करते हैं दूसरे लोग कुछ नहीं करते।

जब हमारे अंदर आत्मा की लहर उठती है तब हमारे विचार शुद्ध हो जाते हैं सच बाहर आता है और हम अपनी कमियों को महसूस करते हैं कि हम वह नहीं कर रहे जो हमें करना चाहिए। आप जब अपने आपको पाखंडी महसूस करें तो आपको समझ जाना चाहिए कि यह आपकी आत्मा की आवाज है जो आपको बता रही है कि आपको क्या करना चाहिए?

हमारे अंदर सदा ही चार ताकतें- मन, बुद्धि, विवेक और अहंकार काम करते हैं। मन हमें अच्छा या बुरा काम करने के लिए मजबूर करता है। बुद्धि हमें अच्छा काम करने के लिए प्रेरित करती है। विवेक से हमें पता लगता है कि हमारे आस-पास क्या हो रहा है? अहंकार हमें महसूस करवाता है कि हम ही सब कुछ करने वाले हैं; ये चारों ताकतें हमें गुमराह करती हैं।

जब आपके अंदर बुरे विचार उठते हैं तो आपको समझ लेना चाहिए कि आपका मन आपके ऊपर हमला कर रहा है, आपको मन से लड़ने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। जब आपके मन में परमात्मा और भजन-सिमरन के लिए विचार उठें तो आपको समझ लेना चाहिए कि ये विचार आपके गुरु की तरफ से आ रहे हैं ।

एक प्रेमीः- *क्या ज्यादा खाना खाने से हमें भजन-सिमरन पर बैठने में मदद मिलती है और हम गहरी साँस ले सकते हैं?*

बाबा जीः- प्यारेयो! आपको उतना ही खाना खाना चाहिए जितना आप हजम कर सकें। खाना खाने के बाद यह महसूस नहीं होना चाहिए कि आपने ज्यादा खाना खा लिया है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''इसमें कोई समझदारी नहीं कि ज्यादा खाना खाने के बाद आप हाजमें के लिए कोई चूर्ण खाएं।''

एक प्रेमीः *भजन-सिमरन करते हुए हमारे शरीर में दर्द होता है। जब हम भजन-सिमरन के लिए आपके साथ कमरे में बैठते हैं तो क्या आप भी हमारे साथ उस दर्द को महसूस करते हैं? क्या आप हमें उस दर्द से मुक्त करवाने में हमारी मदद करते हैं?*

बाबा जीः- आपको ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि गुरु आपके दर्द को नहीं जानता। एक पल भी ऐसा नहीं होता जब गुरु शिष्य के दर्द को महसूस न करे। इससे फर्क नहीं पड़ता कि आप यहाँ बैठकर सिमरन करें या अपने घर में बैठकर सिमरन करें। गुरु सदा ही आपकी मदद करता है और वह हमेशा ही आपके दर्द को महसूस करता है। गुरु हमेशा ही अपने शिष्य की भलाई के लिए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता है। संगत ही गुरु का परिवार होती है, गुरु परमात्मा से संगत की भलाई के लिए प्रार्थना करते हैं। गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैंः

सुखी बसे मेरो परिवारा, सेवक सिख सभे करतारा।

कबीर साहब कहते हैं, ''वही गुरु कहलवाने का हकदार है जो दूसरों का दर्द जान सके, उस दर्द को उठा सके। जो दूसरों के दर्द को नहीं जानता उसे गुरु नहीं कहलवाना चाहिए।''

कई सतसंगियों ने अपने जीवन में अनुभव भी किया होता है कि गुरु दुनियावी कामों में भी अपने शिष्यों की मदद करता है। सतसंगी कई बार देखता है कि गुरु सामने आकर उसकी मदद करता है और कभी पर्दे के पीछे भी उसकी मदद करता है। सतसंगी को अपने किए हुए हर कर्म की सजा नहीं भुगतनी पड़ती। गुरु खुशी और प्यार से अपने शिष्य के कर्मों का बोझ अपने ऊपर लेता है जिसका शिष्य को पता भी नहीं चलता।

एक बार महाराज कृपाल ने सतसंग देने के लिए श्री गंगानगर आना था। आपके आने से पहले प्रेमी लोग सतसंग का इंतजाम देखने के लिए आए हुए थे। जब वे प्रेमी मेरे पास आए उस समय मुझे बहुत तेज बुखार था। उन प्रेमियों ने मुझसे पूछे बिना महाराज जी को दिल्ली तार दे दिया कि मुझे बहुत तेज बुखार है। जब मुझे इस बात का पता लगा तो मैं उन प्रेमियों से बहुत नाराज हुआ कि आप लोगों ने ऐसा क्यों किया? मैं जानता था कि जब मेरे गुरु को मेरी बीमारी का पता चलेगा तो वह मेरे कर्म अपने ऊपर लेंगे। मेरा तेज बुखार उतर गया; मैं समझ गया कि महाराज जी ने मेरे कर्म अपने ऊपर ले लिए हैं।

बहुत से प्रेमी महाराज जी के आने का इंतजार कर रहे थे। मैंने उन प्रेमियों से कहा , ''महाराज जी आज नहीं कल आएंगे।'' महाराज जी को तेज बुखार हो गया इसलिए उन्हें गंगानगर आने का प्रोग्राम टालना पड़ा। तीसरे दिन जब महाराज जी गंगानगर

आए तब आपका चेहरा पीला पड़ा हुआ था और आप बहुत कमजोर दिखाई दे रहे थे। मैं जब महाराज जी से अकेले में मिला तो मैं रो पड़ा, मैंने आपसे माफी माँगी। मैंने आपसे कहा, ''हे सतगुरु! आप मुझे माफ कर दें, मैंने आपको तार नहीं भेजा था। मैं जानता था कि आप मेरे कर्म अपने ऊपर ले लेंगे। मैं तो ठीक हूँ लेकिन मैं आपको बीमार देख रहा हूँ।'' शिष्य ऐसा कभी नहीं चाहता कि उसका गुरु उसके कर्मों का बोझ उठाए। शिष्य सदा ही सतगुरु का बोझ कम करने में खुश होता है।

जब आत्मा को पूर्ण सतगुरु के दर्शन होते हैं तो आत्मा कई जन्मों के कर्मों से मुक्त हो जाती है। जब आत्मा को पूर्ण गुरु से 'नामदान' मिलता है, सतगुरु इस पर दया करता है तब इसके पिछले जन्मों के कई कर्म खत्म हो जाते हैं। आत्मा को गुरु पर पूरा विश्वास हो जाता है कि इसका गुरु इंसान नहीं सृष्टि का रचयिता है और इसे सच्चखंड पहुँचाएगा। भाग्यशाली आत्माएं ही गुरु की महिमा को समझ सकती हैं। बुल्लेशाह कहते हैः

बुल्लया साड़ा ओथे वासा, जित्थे बहुते अन्ने।
ना साड़ी कोई कद्र पछाणे, ना सानू कोई मन्ने।।

यह दुनिया अंधे लोगों से भरी पड़ी है। बहुत कम लोग ही सतगुरु को पहचानते हैं। इतिहास इस बात का गवाह है कि दुनिया ने किस तरह कबीर साहब, गुरु नानकदेव जी, गुरु अर्जुनदेव जी और गुरु गोबिंद सिंह जी को कष्ट दिए। उन लोगों के पास महात्माओं को पहचानने वाली आँखें नहीं थी कि इन महात्माओं के अंदर परमात्मा काम कर रहा है इसलिए उन्होंने किसी महात्मा को सूली पर चढ़ाया और किसी महात्मा को गर्म तवे पर बिठाया।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''मैं उन्हें अंधा कहता हूँ जिनके पास परमात्मा की दी हुई आँखें तो हैं लेकिन वे परमात्मा की रोशनी को नहीं देख पाते।''

एक प्रेमीः- *हम जिंदगी में किन चीजों को खुद चुन सकते हैं? क्या सब कुछ पहले से ही तय है? नामलेवा और बिना नामलेवा में क्या फर्क है?*

बाबा जीः- सब कुछ पहले से ही तय होता है। सतसंगी पर जब कोई दुःख आता है तो उसे सारा दुःख नहीं भोगना पड़ता, उसके ऊपर सतगुरु का हाथ होता है। सतगुरु सदा ही उसकी रक्षा करता है। हम हमेशा अपने मन की बात सुनते हैं जब कुछ अच्छा होता है तो हम कहते हैं, ''यह सब हमने किया है। जब कुछ अच्छा नहीं होता तो हम उसके लिए परमात्मा को जिम्मेवार ठहराते हैं।'' हम मन के कहे अनुसार चलते हैं लेकिन जब हम अपनी आत्मा को मन के पिंजरे से आजाद कर लेते हैं तो हमें मन और आत्मा का फर्क समझ आ जाता है।

एक प्रेमीः- *जब मैं दोपहर के बाद सिमरन के लिए बैठता हूँ तो मुझे बहुत मुश्किल होती है?*

बाबा जीः- दुनिया के बारे में न सोचें। अपना ध्यान सिमरन की तरफ रखें आपको कोई मुश्किल नहीं आएगी।

***

धन्य अजायब

अहमदाबाद में सतसंग का कार्यक्रम

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से हर साल की तरह इस बार भी अहमदाबाद में 3, 4 व 5 जुलाई 2015 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में विनती है कि सतसंग में पहुँचकर सन्त वचनों से लाभ उठाएं।

ईश्वर भवन,
क्रॉस रोड, (नजदीक कॉमर्स कालेज),
नवरंगपुरा,
अहमदाबाद (गुजरात)
फोन - 99 98 94 62 31, 97 25 00 57 94 व 96 38 75 20 20